

---

.. shrIshivashankara or yamabhaya nivAraNa stotram ..

॥ श्रीशिवशङ्कर अथवा यमभय निवारणस्तोत्रम् ॥

Document Information

---

Text title : shivashankarastotra  
File name : shivashankarastotra.itx  
Location : doc\_shiva  
Language : Sanskrit  
Subject : philosophy/hinduism/religion  
Transliterated by : Sunder Hattangadi sunderh at hotmail.com  
Proofread by : Sunder Hattangadi sunderh at hotmail.com  
Latest update : December 22, 2008  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com  
Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 3, 2016

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ श्रीशिवशङ्कर अथवा यमभय निवारणस्तोत्रम् ॥

अतिभीषणकटुभाषणयमकिङ्करपटली  
कृतताडनपरिपीडनमरणागमसमये ।  
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ १ ॥

असदिन्द्रियविषयोदयसुखसात्कृतसुकृतेः  
परदूषणपरिमोक्षणकृतपातकविकृतेः ।  
शमनाननभवकानननिरतेर्भव शरणं  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ २ ॥

विषयाभिधवडिशायुधपिशितायितसुखतो  
मकरायितमतिसन्ततिकृतसाहसविपदम् ।  
परमालय परिपालय परितापितमनिशं  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ३ ॥

दयिता मम दुहिता मम जननी मम जनको  
मम कल्पितमतिसन्ततिमरुभूमिषु निरतम् ।  
गिरिजासुख जनितासुख वसतिं कुरु सुखिनं  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ४ ॥

जनिनाशन मृतिमोचन शिवपूजननिरतेः  
अभितो दृशमिदमीदृशमहमावह इति हा ।  
गजकच्छप जनितश्रम विमलीकुरु सुमतिं  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ५ ॥

त्वयि तिष्ठति सकलस्थितिकरुणात्मनि हृदये  
वसुमार्गण कृपणेक्षण मनसा शिव विमुखम् ।  
अकृताह्निकमसुपोषकमवतात् गिरिसुतया  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ६ ॥

पितराविति सुखदाविति शिशुना कृतहृदयौ  
शिवया सह भयके हृदि जनितं तव सुकृतम् ।  
इति मे शिव हृदयं भव भवतात्तव दयया  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ७ ॥

शरणागतभरणाश्रित करुणामृतजलधे  
शरणं तव चरणौ शिव मम संसृतिवसतेः ।  
परिचिन्मय जगदामयभिषजे नतिरावतात्

शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ८ ॥

विविधाधिभिरतिभीतिरकृताधिकसुकृतं  
शतकोटिषु नरकादिषु हतपातकविवशम् ।  
मृड मामव सुकृतीभव शिवया सह कृपया  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ९ ॥

कलिनाशन गरलाशन कमलासनविनुत  
कमलापतिनयनार्चितकरुणाकृतिचरण ।  
करुणाकर मुनिसेवित भवसागरहरण  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ १० ॥

विजितेन्द्रिय विबुधार्चित विमलाम्बुजचरण  
भवनाशन भयनाशनभजिताङ्गितहृदय ।  
फणिभूषण मुनिवेषण मदनान्तक शरणं  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ११ ॥

त्रिपुरान्तक त्रिदशेश्वर त्रिगुणात्मक शम्भो  
वृषवाहन विषदूषण पतितोद्धर शरणम् ।  
कनकासन कनकाम्बर कलिनाशन शरणं  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीशिवशङ्करस्तोत्रम् ॥

Encoded and proofread by SUnder Hattangadi sunderh@hotmail.com

.. shrIshivashankara or yamabhaya nivAraNa stotram ..  
was typeset on August 3, 2016

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

